भारत में ज्योतिष एक भारतीय ज्ञान प्रणाली

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

वर्तमान समय में जब आधुनिक शिक्षा प्रणाली मुख्यतः पाश्चात्य विज्ञान और भौतिक दृष्टिकोण पर आधारित है, तब भी भारतीय ज्ञान परम्परा का महत्व कम नहीं हुआ है. आज विश्वभर में योग, आयुर्वेद और ज्योतिष को पुनः सम्मान मिल रहा है क्योंकि ये प्रणालियाँ केवल बाह्य ज्ञान नहीं देतीं, बल्कि जीवन की गहराई और समग्रता को समझने की दृष्टि प्रदान करती हैं. विशेष रूप से ज्योतिष शास्त्र व्यक्ति को आत्मचिन्तन की प्रेरणा देता है, यह उसे यह समझने में सहायता करता है कि उसका जीवन केवल आकस्मिक घटनाओं की श्रृंखला नहीं, बल्कि एक नियोजित ब्रह्माण्डीय योजना का अंग है, जहाँ प्रत्येक अनुभव, प्रत्येक चुनौती और प्रत्येक अवसर का एक गहरा कारण और उद्देश्य है. यह दृष्टि व्यक्ति को अपने कर्म के प्रति सजग बनाती है, आत्मानुशासन सिखाती है और जीवन में धैर्य तथा स्वीकार का भाव उत्पन्न करती है.

भारतीय संस्कृति का स्वरूप आदिकाल से ही ज्ञान, विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म के समन्वय पर आधारित रहा है. यहाँ ज्ञान का अर्थ केवल जानकारी या सूचनाओं का संग्रह नहीं, बल्कि जीवन के सभी पक्षों का समन्वित और आध्यात्मिक बोध है. भारत में ज्ञान की परिकल्पना ऐसी रही है जिसमें भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही तत्वों का संतुलन विद्यमान है. इस व्यापक ज्ञान परम्परा में ज्योतिष शास्त्र का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि यह केवल ग्रह-नक्षत्रों की गणना या भविष्यवाणी का विज्ञान नहीं है, बल्कि यह ब्रह्माण्ड और मनुष्य के पारस्परिक सम्बन्ध का अध्ययन करने वाली एक समग्र विज्ञान-परम्परा है. ज्योतिष को वेद का नेत्र कहा गया है—ज्योतिषं वेदचक्षुः—क्योंकि यह ब्रह्माण्डीय व्यवस्था, कालचक्र, ऋतु परिवर्तन, ग्रह गति, तथा मानव कर्म के बीच सम्बन्ध स्थापित करता है. यह वेदों का अंग है और काल को मापने, समय का निर्धारण करने तथा शुभाशुभ का निर्णय करने में सहायक होता है. इस प्रकार यह केवल एक तकनीकी विद्या नहीं बल्कि भारतीय दार्शनिक चिन्तन की अभिन्न धारा है.

भारतीय ज्योतिष की संरचना त्रिविध है—सिद्धान्त ज्योतिष, होरा शास्त्र और मुहूर्त शास्त्र. सिद्धान्त ज्योतिष खगोलशास्त्र का आधार है, जिसमें ग्रहों की गति, नक्षत्रों की स्थिति, सूर्य और चन्द्र की चाल, पंचांग की गणना आदि का विवेचन किया जाता है. यह खगोल विज्ञान की दृष्टि से अत्यन्त उन्नत परम्परा है, जिसके आधार पर समय की माप, ऋतुओं का क्रम, ग्रहणों की गणना तथा खगोलीय पिण्डों की दूरी का आकलन किया जाता था. होरा शास्त्र मानव जीवन और जन्मकुंडली का अध्ययन करता है. इसमें जन्मसमय के ग्रहों की स्थिति का विश्लेषण कर व्यक्ति के कर्मफल, प्रवृत्तियों, स्वास्थ्य, शिक्षा, विवाह, धन, और आयु का संकेत मिलता है. यह भाग्य और कर्म का सम्बन्ध स्पष्ट करता है और यह बताता है कि जीवन में घटनाएँ किस प्रकार पूर्व जन्म के संस्कारों और वर्तमान कर्मों से जुड़ी हैं. मुहूर्त शास्त्र कर्म और समय के सामंजस्य की विद्या है. यह बताता है कि कौन-सा कार्य किस समय करने पर सफलता और शुभ फल की प्राप्ति होगी. इस प्रकार भारतीय ज्योतिष केवल भविष्यवाणी का उपकरण नहीं बल्कि काल के विज्ञान का दर्शन है, जो यह सिखाता है कि जीवन के प्रत्येक कर्म में समय का क्या महत्त्व है.

भारतीय ज्ञान परम्परा की विशेषता यह है कि यह किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं रही. यहाँ का ज्ञान समग्र है, जिसमें दर्शन, गणित, खगोल, चिकित्सा, नीति, कला, साहित्य, धर्म, अध्यात्म, संगीत, स्थापत्य और समाजशास्त्र तक सभी विषय परस्पर जुड़े हुए हैं. इसी कारण भारत में अन्य अनेक ज्ञान प्रणालियाँ विकसित हुईं जिन्होंने मानव जीवन को सम्पूर्णता में देखा. आयुर्वेद शास्त्र शरीर, मन और आत्मा के त्रिविध संतुलन का विज्ञान है. चरक, सुश्रुत और वाग्भट जैसे आचार्यों ने इसे केवल औषधीय चिकित्सा तक सीमित नहीं रखा बल्कि इसे आहार, विहार, ऋतुचर्या और मानसिक संतुलन का विज्ञान बनाया. योग शास्त्र पतंजलि मुनि द्वारा स्थापित एक ऐसी प्रणाली है जो साधक को आत्म-ज्ञान और मोक्ष की दिशा में ले जाती है. योग शरीर और मन दोनों की शुद्धि का साधन है, जो आज विश्वभर में स्वास्थ्य के विज्ञान के रूप में स्वीकार किया जा रहा है. वास्तु शास्त्र दिशा, ऊर्जा, स्थल और पंचमहाभूतों के समन्वय का विज्ञान है. यह दिखाता है कि ब्रह्माण्डीय ऊर्जा का प्रवाह किस प्रकार मानव निवास और स्थापत्य में समरसता उत्पन्न करता है.

भारतीय ज्ञान परम्परा में दर्शन का भी अत्यन्त महत्त्व है. यहाँ षड्दर्शन की परम्परा—न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त—ज्ञान की विविध पद्धतियों को प्रस्तुत करती है. न्याय और वैशेषिक तर्क और पदार्थ के अध्ययन पर केन्द्रित हैं, सांख्य सृष्टि के तत्त्वों का विश्लेषण करता है, योग आत्मसाक्षात्कार का मार्ग है, मीमांसा कर्म और यज्ञ के माध्यम से धर्म का विवेचन करती है और वेदान्त ब्रह्म-तत्त्व के ज्ञान की चरम अवस्था है. इन दर्शनों ने भारतीय चिन्तन को तर्क, अनुभव, श्रद्धा और आध्यात्म का समन्वित स्वरूप दिया. धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र जैसे ग्रन्थों ने समाज, शासन और नीति की व्यवस्था को वैज्ञानिक ढाँचे में प्रस्तुत किया. मनुस्मृति और याज्ञवल्क्यस्मृति ने आचार और धर्म के नियम बताए, जबकि कौटिल्य का अर्थशास्त्र शासन और राजनीति का गूढ़ विज्ञान है.

भारतीय परम्परा में संगीत, नाट्य और कला को भी ज्ञान का अंग माना गया. भरतमुनि का नाट्यशास्त्र केवल अभिनय की कला नहीं बल्कि यह भाव, रस और आनन्द के विज्ञान का ग्रन्थ है. भारतीय संगीत शास्त्र भी नाद-ब्रह्म की परिकल्पना पर आधारित है, जहाँ स्वर, लय और ताल ब्रह्माण्डीय कम्पन से सम्बन्धित हैं. इसी प्रकार गणित और खगोलशास्त्र की परम्परा ने विश्व को शून्य, दशमलव, बीजगणित, त्रिकोणमिति, ग्रहण गणना और कलन जैसी अवधारणाएँ दीं. आर्यभट, वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त, लल्ल, भास्कराचार्य आदि आचार्यों ने गणनात्मक पद्धति को अत्यन्त सूक्ष्मता से विकसित किया. यह गणितीय परम्परा ज्योतिष के सिद्धान्त भाग को सुदृढ़ आधार प्रदान करती है.

भारतीय ज्ञान परम्परा की सबसे बड़ी विशेषता उसकी समग्र दृष्टि है. यहाँ किसी भी विषय को पृथक या सीमित रूप में नहीं देखा गया बल्कि उसे जीवन, प्रकृति और ब्रह्माण्ड के एकात्मक ताने-बाने में समझा गया. यहाँ का ज्ञान अनुभव पर आधारित है, केवल तर्क या प्रयोग पर नहीं बल्कि साधना, अन्तर्दृष्टि और तप से उत्पन्न ज्ञान पर आधारित है. श्रुति-स्मृति की परम्परा के माध्यम से यह ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप में प्रवाहित हुआ, जिससे उसमें लचीलापन और गहराई बनी रही. भारतीय ज्ञान परम्परा का अन्तिम उद्देश्य सदैव लोकमंगल रहा है—ज्ञान का प्रयोजन केवल आत्मोन्नति नहीं बल्कि समस्त सृष्टि के कल्याण हेतु है.

कोजागरी पूर्णिमा, अमृत वर्षा और धन-समृद्धि के उपाय

हिंदू धर्म में पूर्णिमा की तिथि को अत्यंत शुभ और मंगलकारी माना गया है. प्रत्येक पूर्णिमा का अपना अलग महत्व होता है, लेकिन सभी पूर्णिमाओं में शरद पूर्णिमा को सर्वोत्तम माना जाता है. इसे कोजागरी पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है. इस दिन भगवान विष्णु और मां लक्ष्मी की विशेष पूजा का विधान है. मान्यता है कि इस दिन विधि-विधान से पूजा और दान करने से जीवन में सुख-समृद्धि और शांति का आगमन होता है, क्योंकि इस रात मां लक्ष्मी पृथ्वी पर भ्रमण करती हैं.

शरद पूर्णिमा का महत्व- शास्त्रों के अनुसार, शरद पूर्णिमा की रात को चंद्रमा अपनी सोलह कलाओं से पूर्ण होता है और अमृतमयी किरणों की वर्षा करता है. इस रात चंद्रमा की किरणों में औषधीय और दिव्य गुण माने जाते हैं.

अमृतमयी खीर- इसी कारण इस दिन दूध से बनी खीर को पूरी रात चांदनी में रखा जाता है और अगले दिन इसे प्रसाद के रूप में ग्रहण किया जाता है. माना जाता है कि खीर पर चंद्रमा की किरणें पड़ने से उसमें अमृत तत्व समाहित हो जाते हैं.

स्वास्थ्य लाभ- मान्यता है कि यह प्रसाद ग्रहण करने से शरीर और मन दोनों शुद्ध और ऊर्जावान बनते हैं और कई तरह के रोगों से मुक्ति मिलती है.

शरद पूर्णिमा पर विशेष उपाय (धन-समृद्धि के लिए)- मां लक्ष्मी की आराधना- अगर आप आर्थिक तंगी से परेशान हैं तो शरद पूर्णिमा पर स्नान के बाद भगवान विष्णु और मां लक्ष्मी की पूजा करें. मां लक्ष्मी को कमल का फूल और एकाक्षी नारियल अर्पित करें. कमल का फूल मां लक्ष्मी को अत्यंत प्रिय है और यह उपाय धन संबंधी परेशानियों को दूर करने वाला माना जाता है.

महानवमी देवी सिद्धिदात्री की आराधना और कन्या पूजन

नवरात्रि का नौवां और अंतिम दिन, महानवमी, इस साल 1 अक्टूबर 2025 को श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया जाएगा. यह दिन देवी दुर्गा की शक्ति और बुराई पर उनकी विजय का प्रतीक है. इस दिन विशेष रूप से देवी सिद्धिदात्री की पूजा की जाती है, जिन्हें महिषासुर जैसे राक्षसों का नाश करने वाली माना जाता है. देवी सिद्धिदात्री, जैसा कि उनके नाम से स्पष्ट है, सभी प्रकार की आठ सिद्धियाँ (अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व) प्रदान करने वाली हैं. उनकी पूजा करने वाले भक्तों को ज्ञान, मोक्ष और अलौकिक शक्तियाँ प्राप्त होती हैं. महानवमी का पौराणिक महत्व और गहरा अर्थ

महानवमी केवल एक पूजा का दिन नहीं है, बल्कि यह अधर्म पर धर्म की अंतिम विजय का प्रतीक है. पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, देवी दुर्गा ने महिषासुर के साथ नौ दिनों तक युद्ध किया था और इसी नौवें दिन उन्होंने राक्षस का वध कर पृथ्वी को उसके आतंक से मुक्त कराया था. यह दिन नारी शक्ति (शक्ति स्वरूप) के चरम को दर्शाता है. महानवमी को देवी की आराधना से सफलता, ज्ञान और दिव्य सुरक्षा प्राप्त करने का सबसे शुभ समय माना जाता है. इस दिन से पूरे वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है, जो परिवारिक सामंजस्य और आध्यात्मिक उत्थान के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है.

नवमी होम (हवन और पूर्णाहुति)

पूजा के अंतिम चरण में हवन या होम करना बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है. यह अनुष्ठान पूजा की पूर्णता को दर्शाता है और इसे शुद्धि एवं प्रार्थना का माध्यम माना जाता है. शुद्धिकरण- हवन के दौरान अग्नि में घी, तिल, जौ, चंदन पाउडर, और हवन सामग्री अर्पित की जाती है. इससे निकलने वाला धुआं न केवल वातावरण को शुद्ध करता है, बल्कि यह माना जाता है कि हमारी प्रार्थनाएं सीधे देवताओं तक पहुँचती हैं. अंतिम चरण (पूर्णाहुति)- हवन का समापन पूर्णाहुति से होता है, जिसके बाद भक्त देवी से जाने-अनजाने में हुई गलतियों के लिए क्षमा मांगते हैं और उनसे आशीर्वाद लेते हैं.

पूजा और विस्तृत रिवाज

1. कंजक पूजा या कन्या पूजा- यह महानवमी का सबसे महत्वपूर्ण और पवित्र अनुष्ठान है, जो नौ देवियों (नव दुर्गा) के सम्मान में किया जाता है. नौ छोटी कन्याओं को साक्षात देवी का रूप मानकर घर पर आमंत्रित किया जाता है.

सम्मान और आदर- सबसे पहले उनके पैर धोकर उन्हें आसन पर बिठाया जाता है. उन्हें सम्मान स्वरूप तिलक और कलावा बांधकर देवी का आह्वान किया जाता है.

पवित्र भोग- उन्हें विशेष रूप से तैयार किया गया भोग, जिसमें खीर या हलवा, पूरी और काला चना शामिल होता है, खिलाया जाता है. यह भोग सात्विक और पौष्टिक होता है.

उपहार (वस्त्र और श्रृंगार)- पूजा के बाद कन्याओं को श्रद्धापूर्वक चुनरी, चूड़ियां, बिंदी जैसे श्रृंगार के सामान, कपड़े, फल, और दक्षिणा (पैसे) भेंट किए जाते हैं. कई भक्त उन्हें खिलौने या स्कूल का सामान भी देते हैं. यह उपहार दान का नहीं, बल्कि देवी को भेंट देने का भाव दर्शाता है. कुछ स्थानों पर भैरव स्वरूप में एक छोटे लड़के (लांगुर) को भी कन्याओं के साथ भोजन कराया जाता है.

आयुध पूजा या शस्त्र पूजा (कर्म की आराधना)

महानवमी पर आयुध पूजा का विशेष महत्व है, खासकर उन लोगों के लिए जो अपने कर्म को ही पूजा मानते हैं. इस दौरान पुराने हथियार, औजार, मशीनें, और आधुनिक उपकरण (जैसे लैपटॉप, वाहन, कैमरा) को देवी के शक्ति प्रतीक के रूप में पूजा जाता है.

पूजन विधि- उपकरणों को साफ किया जाता है, उन पर हल्दी, कुमकुम और अक्षत लगाया जाता है, और फूलों की माला अर्पित की जाती है. यह पूजा इस बात का प्रतीक है कि हमें अपने काम और कर्म के प्रति हमेशा समर्पित रहना चाहिए.

दशहरा 2025 : बुराई पर अच्छाई की विजय का पर्व

प्रदोष काल में होगा रावण दहन

आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि की शुरुआत 1 अक्टूबर 2025 को शाम 7 बजकर 1 मिनट पर होगी और इसका समापन 2 अक्टूबर 2025 को शाम 7 बजकर 10 मिनट पर होगा. चूँकि दशमी तिथि का सूर्योदय 2 अक्टूबर को हो रहा है और इस दिन प्रदोष काल भी उपलब्ध है, इसलिए विजयादशमी का पर्व इसी दिन मनाना शास्त्र सम्मत होगा.

बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक पर्व दशहरा, जिसे विजयादशमी भी कहा जाता है, इस वर्ष 2 अक्टूबर 2025, गुरुवार को मनाया जाएगा. नवरात्रि की तिथियों में भ्रम के बावजूद, ज्योतिषियों ने उदया तिथि और प्रदोष काल के आधार पर पर्व की सही तिथि की घोषणा कर दी है. वैदिक पंचांग के अनुसार, आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि की शुरुआत 1 अक्टूबर 2025 को शाम 7 बजकर 1 मिनट पर होगी और इसका समापन 2 अक्टूबर 2025 को शाम 7 बजकर 10 मिनट पर होगा. चूँकि दशमी तिथि का सूर्योदय 2 अक्टूबर को हो रहा है और इस दिन प्रदोष काल भी उपलब्ध है, इसलिए विजयादशमी का पर्व इसी दिन मनाना शास्त्र सम्मत होगा.

दशहरा का पौराणिक महत्व- यह दिन दो महान पौराणिक घटनाओं का साक्षी है-

शक्ति का विजय- इसी दशमी तिथि पर मां दुर्गा ने नौ दिनों तक चले भयंकर युद्ध के बाद महिषासुर नामक राक्षस का संहार किया था. यह घटना संसार में शांति और न्याय की स्थापना का प्रतीक बनी.

राम की विजय- विजयादशमी से जुड़ी दूसरी प्रमुख मान्यता रामायण से आती है. कहा जाता है कि इसी दिन भगवान राम ने लंकापति रावण का वध कर अधर्म और अन्याय पर धर्म और सत्य की स्थापना की थी.

रावण दहन का शुभ समय- दशहरे के दिन सबसे महत्वपूर्ण परंपरा रावण दहन की है. यह अनुष्ठान परंपरा के अनुसार प्रदोष काल यानी सूर्यास्त के बाद किया जाता है. 2 अक्टूबर को सूर्यास्त का समय शाम 6 बजकर 6 मिनट है, जिसके बाद रावण दहन का शुभ आयोजन किया जाएगा. यह उत्सव अंधकार और असत्य के विनाश का प्रतीक है.

घर में तुलसी के पास भूलकर भी न रखें ये चीजें, रूठ सकती हैं माँ लक्ष्मी!

हिंदू धर्म में तुलसी के पौधे को माँ लक्ष्मी का साक्षात स्वरूप माना जाता है. यह पौधा घर को नकारात्मक ऊर्जा से बचाकर समृद्धि लाता है. हालाँकि, वास्तु शास्त्र कहता है कि तुलसी के पास कुछ वर्जित वस्तुएँ रखने से देवी लक्ष्मी रुष्ट हो सकती हैं और घर में दरिद्रता आ सकती है.

आइए जानते हैं वे कौन सी चीजें हैं जिन्हें तुलसी के पौधे के पास नहीं रखना चाहिए-

शिवलिंग और गणेश प्रतिमा- वास्तु के अनुसार, तुलसी के पास शिवलिंग या गणेश जी की मूर्ति/पूजा वर्जित है. पौराणिक कथाओं के कारण इन दोनों देवताओं के पूजन में तुलसी का उपयोग नहीं किया जाता है, इसलिए इन्हें अलग रखना ही शुभ है.

जूते-चप्पल और झाड़ू/कूड़ा- तुलसी में माँ लक्ष्मी का वास माना जाता है. इसलिए, तुलसी के गमले के पास जूते-चप्पल, झाड़ू या कूड़ेदान कभी नहीं रखने चाहिए. ये वस्तुएँ अपवित्रता की प्रतीक हैं, और इन्हें पास रखने से देवी लक्ष्मी का अपमान होता है, जिससे घर में कंगाली आ सकती है.

कांटेदार पौधे- तुलसी के पास कांटेदार पौधे (जैसे गुलाब) नहीं लगाने चाहिए. वास्तु के अनुसार, कांटेदार पौधे घर में नकारात्मकता और लड़ाई-झगड़ों को बढ़ाते हैं. इन्हें तुलसी से उचित दूरी पर ही रखना चाहिए.

राशिफल

दिनांक- 28 सितम्बर से 04 अक्टूबर

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार,
जबलपुर मो.नं. 098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य कन्या राशि में, मंगल तुला राशि में, बुध कन्या राशि में, गुरू मिथुन राशि में, शुक्र सिंह राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा वृश्चिक धनु मकर और कुम्भ राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव:- इस सप्ताह बाजार में तेजी का रूख रहेगा, इस समय रूई में मंदी, चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी, सोना, तांबा, पीतल, जस्ता, हींग, पारा, केसर में तेजी होगी. ता. 4 को पू.भाद्रपद के चतुर्थ चरण मं शनि का प्रवेश होता है जिसके प्रभाव से बाजारों में लाईन अचानक बदल सकती है सावधानी रखें. अलसी, ऐरेण्डा, गुड़, बिनौरा, मूंगफली, कपूर, सुगंधित वस्तुओं में अचानक मंदी होगी, रूई चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी, चावल अलसी, सरसों, चना, गेहू में तेजी का संकेत है.

पर्व-व्रत-त्यौहार :

सोमवार	29 सितम्बर को	सरस्वती आवाहन, महानिशा पूजा
मंगलवार	30 सितम्बर को	श्रीदुर्गा अष्टमी व्रत, महाष्टमी, महानवमी, दुर्गानवमी, जवारे विसर्जन
गुरूवार	02 अक्टूबर को	विजया दशमी, दशहरा, दुर्गा विसर्जन
शुक्रवार	03 अक्टूबर को	पापांकुशा एकादशी व्रत, भरत मिलाप
शनिवार	04 अक्टूबर को	शनि प्रदोष व्रत

मेष

आपका यह सप्ताह प्रगति व सफलता लेकर आ रहा है, जो सपने देख रहे हैं, उन्हें पूरा करने की राह बनेगी, अपनी वरिष्ठता और सामर्थ्य से ज्यादा जिम्मेदारी आने से आपका तनाव बढ़ सकता है, समाज में महत्वपूर्ण स्थान बनाने में सफल रहेंगे, दूसरों की मदद कर मन को खुशी देंगे,कार्यस्थल पर अनिश्चय का माहौल बना रहेगा, संबंधों की फिर से समीक्षा करनी होगी.

वृषभ

इस सप्ताह निजी संबंधों पर ध्यान देने का भरपूर समय मिलेगा, पुराने दोस्तों से मुलाकातों का दौर चलेगा, किसी भी योजना को आप इस तरह से अंजाम देंगे कि लोग आपकी तारीफकरेंगे, कार्य की अधिकता रहेगी, आपको आय के नये स्त्रोत तलाशना पड़ेंगे, घूमने का कार्यक्रम बन सकता है, दूसरों की मर्यादा का ध्यान रखें, बुजुर्ग व्यक्ति के स्वास्थ्य की चिन्ता हो सकती है.

मिथुन

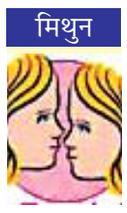

इस सप्ताह अपनी अभिरूचियों पर खुशियों पर ध्यान देने का अवसर मिलेगा. आप जो चाहते हैं, उसके अनुसार आपके कार्य बनते चले जायेंगे, भाग्य मदद करेगा, हिम्मत और विश्वास से वृद्धि होगी. कैरियर में पहले से अच्छे प्रस्ताव मिलेंगे, आध्यात्मिक व धार्मिक कार्यों में आपकी रूचि बढ़ेगी, तरक्की की उँचाईयों पर पहुंचेंगे, लेकिन व्यक्तिगत संबंधों को भी पूरा महत्व देंगे.

कर्क

इस सप्ताह अपने प्रयासों और मेहनत की बदौलत अच्छी सफलता मिलेगी, आपका मौलिक चिन्तन आगे बढ़ने में मदद करेगा, कार्यक्षेत्र में आपको निरंतर सफलता मिलेगी, पारिवारिक व निजी जीवन में खुशियों का अनुभव होगा, जो लोगआपके कार्य में अड़चने खड़ी कर रहे हैं, वे सभी सहयोग करेंगे, मेहनत कर लाभ प्राप्त करेंगे, सही निवेश के लिये बड़ों की राय जरूरी है.

सिंह

इस सप्ताह परिवार की सुख सुविधाओं पर बड़ा खर्च होगा, जिसे पसंद करते हैं, उसके साथ कुछ समय गुजारकर खुशी मिलेगी, पारिवारिक उत्सवों में प्रसन्नता मिलेगी, उच्च अध्ययन में सफलता के आसार हैं, नौकरी की तलाश कर रहे लोगों को भी सफलता मिलेगी, कामकाज में सावधानी रखें, अपने बिखरे हुये कार्यो को समेटने में सफलता मिलेगी.

कन्या

इस सप्ताह सफलता का वास्तविक आनन्द मिलेगा, जिस योजना को लेकर समय से प्रयास कर रहे थे, उसे अंजाम तक पहुंचाने में सफलता मिलेगी, सामाजिक चमक धमक, के साथ सफलता के आसमान पर बढ़ते दिखाई देंगे, नौकरी में स्थान बदलने का मौका मिल सकता है, घूमने फिरने के बहाने रिश्तेदारी में जा सकते है, पर विपरीत असर पड़ सकताहै, उन्नति की संभावना है.

तुला

इस सप्ताह आपका पूरा ध्यान अपने कैरियर व भविष्य की योजनाओं की ओर रहेगा, नई योजनाओं को पूरा करने में सभी का सहयोग रहेगा, लोग अपनी बात समझाने में सफल रहेंगे, राह में आ रही मुश्किलों का सामना करने पर कामयाबी मिलेगी, कार्यस्थल पर नई शुरूआत का अनुभव होगा, व्यस्तता के कारण परिवार को वक्त देना मुश्किल होगा.

वृश्चिक

इस सप्ताह पुकन्या परेशानी से छुटकारा मिलेगा, सामाजिक और पारिवारिक कार्यक्रमों में आपकी भागीदारी बढ़ेगी, पार्टियों का दौरजारी रहेगा, दायरा बढ़ाने की कोशिश मेंरहेंगे. मौजमस्ती छोड़कर कुछ काम करने का मन बनेगा, संपत्ति संबंधी मामले सुलझेंगे. सप्ताहान्त में विरोधियों से सजग रहकर कार्य करें, मीनकीय कार्यों में परिश्रम से सफलता मिलेगी.

धनु

इस सप्ताह सफलता का योग है, अभी तक की नई मेहनत का लाभ मिलेगा, पारिवारिक व सामाजिक जीवन में अपने संबंधों को फिर घनिष्ठ संबंधों को फिर से बनाने में मदद मिलेगी, मानसिक संतोष के लिये कुछ दिन के लिये घर सेदूर जा सकते हैं, पारिवारिक सुरक्षा हेतु निवेश करेंगे. कार्यक्षेत्र में अधिकारियों से मेलजोल बढ़ायें. आपके लिये फायदेमंद हो सकता है.

मकर

झइस सप्ताह सफलता का अच्छा योग है, भाग्य अनुकूल बना रहने से मुश्किल कार्य भी आसानी से संपन्न होगा, अपनी मंजिल तक पहुंचाने के लिये आपने जितनी मेहनत की है, उसका लाभ मिलेगा, वैभव विलासिता पर खर्च होगा, जो लोग आपको नकारा समझते हैं,वे भी आपकी काबलियत की तारीफकरेंगे, सरकारी मामलों में कुछ विलंब हो सकता है, सौदे का मामला सुलझेगा.

कुम्भ

इस सप्ताह आर्थिक मामलों से निपटना होगा. पुराने कर्जो से छुटकारा पाने के लिये आपको योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ना होगा, पारिवारिक आयोजनाओं में आप बढ़चढ़ कर हिस्सा लेंगे, बच्चों के कैरियर को लेकर चिन्ता रह सकती है, मानसिक तनाव की स्थिति से छुटकारा मिलेगा, जिस पर विश्वास कर रहे हैं, वे लोग आपका साथ छोड़ सकते हैं.

मीन

इस सप्ताह नये संपर्क और नये व्यक्ति लाभदायक रहेंगे, आप सिर्फ लाभ पर ही ध्यान नहीं देंगे, अपितु रिश्ते बनाने का प्रयास करेंगे, आर्थिक स्थिति में सुधार के कारण दूसरों के कार्य में ध्यान देंगे, किसी कार्य के लिये की गई यात्रा लाभदायक सिद्ध होगी, अपने लगाव व नजरिये में बदलाव का अवसर मिलेगा, व्यक्तिगत जीवन में कार्य में सामंजस्य से आप कामयाब रहेंगे.